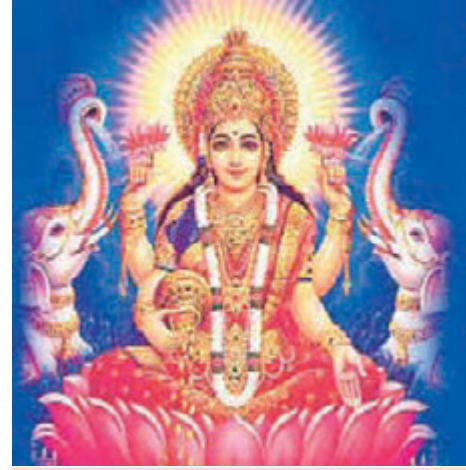


मां लक्ष्मी भौतिक और आंतरिक सुखों को देने वाली देवी हैं। उनकी कृपा होने पर किसी प्रकार का कष्ट शेष नहीं रहता...



समृद्धिदात्री मां श्री लक्ष्मी

लक्ष्मी विष्णु भगवान की माया हैं तथा सदैव उनके चरणों में ही विराजती हैं। बिना विष्णु भगवान के लक्ष्मी का वास नहीं हो सकता। अतः लक्ष्मी जी का पूजन सदैव विष्णु के साथ ही करना चाहिए।



मां लक्ष्मी के एक मुख व चार हाथ हैं। वह एक लक्ष्य और चार प्रकृतियों (दूरदर्शिता, दृढ़ संकल्प, श्रमशीलता एवं व्यवस्था शक्ति) की प्रतीक हैं।

कैसे करें मां को प्रसन्न

- लक्ष्मी समुद्र से उत्पन्न हैं। समुद्र से उत्पन्न दक्षिणावर्ती शंख, मोती शंख, कुबेर पात्र, गोमती चक्र आदि उनके भाई-बंधुओं का लक्ष्मी पूजन के साथ पूजन करने से वह अति प्रसन्न होकर साधक पर कृपा करती हैं।
- लक्ष्मी पूजन के पश्चात अन्य देवताओं की भांति इनकी आरती उतारने की बजाय श्रीसूक्त अथवा लक्ष्मी सूक्त का जाप करके अपने घर में स्थिर रूप में वास करने की प्रार्थना करें।
- सदाचार का पालन करें तथा मन में उदारता बनाए रखें। दुराचारी के यहां लक्ष्मी का वास ज्यादा देर तक नहीं होता। सदाचार का त्याग करने के कारण ही पाताल के राजा बलि के घर से लक्ष्मी स्वर्ग लोक को प्रस्थान कर गई थीं।
- लक्ष्मी के स्थिर वास के लिए अपने ऑफिस में लाल कपड़े में हल्दी की एक गांठ, तांबे का एक सिक्का, सफेद सरसों, एक मुट्ठी चावल बांधकर किसी दीवार पर टांग दें। इससे कारोबार में वृद्धि होती है। कारोबारी मुश्किलों का समाधान होता है।
- लक्ष्मी पूजन करने से पहले शंख बजाएं। पूजन के पश्चात शंख में रखा जल सारे घर में छिड़क दें। थोड़ा चरणामृत भी लें। शंख बजाने से घर में सकारात्मक ऊर्जा प्रवाहित होती है। इससे रोग, शोक घर से दूर जाते हैं।
- लक्ष्मी विष्णु भगवान की माया हैं तथा सदैव उनके चरणों में ही विराजती हैं। बिना विष्णु भगवान के लक्ष्मी का वास नहीं हो सकता। अतः लक्ष्मी जी का पूजन सदैव विष्णु के साथ ही करना चाहिए।
- लक्ष्मी स्तोत्र का पाठ नित्य करने से घर में लक्ष्मी व सुख सम्पदा का आगमन होता है। लक्ष्मी पूजन के दौरान खुशबूदार पदार्थों का प्रयोग करें तथा लाल पुष्प अर्पित करें।

लक्ष्मी माता जहां भौतिक सम्पत्ति प्रदान करने वाली देवी हैं, वहीं आंतरिक सम्पत्ति जैसे सौहार्द, उत्साह, प्रेम, करुणा, रसिकता और सौन्दर्य की भी अधिष्ठात्री देवी हैं। देवताओं और असुरों ने जब सागर मंथन किया, तो चौदह रत्नों में से एक लक्ष्मी भी प्राप्त हुई। उनके अनुपम गुणों, सौन्दर्य और कान्ति के कारण सुरासुर सभी लक्ष्मी जी पर मोहित हो गए। उन्होंने लक्ष्मी को विविध प्रकार की भेंट दीं। परंतु लक्ष्मी ने सर्वगुण संपन्न विष्णु का वरण किया। अतः वह हरिप्रिया, विष्णुप्रिया, श्री, इंद्रिा आदि नामों से प्रसिद्ध हुई। उमा, राधा और तुलसी के रूप में भी लक्ष्मी के अवतार क्रमशः शिव, कृष्ण और शालिग्राम

की अर्धांगिनी के रूप में हुए। लक्ष्मी परमतत्व परमात्मा की एक विलक्षण शक्ति हैं। परमात्मा की सत, रज और तम रूपा तीन शक्तियां क्रमशः सरस्वती, महालक्ष्मी और महाकाली के रूपों में हैं। महालक्ष्मी प्रवर्तक शक्ति हैं। अतः प्राणियों में आकर्षण, लोभ और आसक्ति उत्पन्न करती हैं।

महालक्ष्मी का स्वरूप

महालक्ष्मी कंचनवर्ण, अतिसुंदरी और अक्षत भग (चिरयौवना) हैं। लक्ष्मी जी को प्रतिमाओं में भी द्विभुजी और चतुर्भुजी स्वरूप में दिखाया गया है। द्विभुजा लक्ष्मी के हाथों में शंख, पद्म तथा चतुर्भुजा लक्ष्मी के हाथों में शंख, पद्म, घट और बिल्वफल रहते हैं, जो क्रमशः जयघोष, पद्म सौंदर्य

अनासक्ति का, घट आनन्द का तथा बिल्वफल भोग का प्रतीक माना गया है। लक्ष्मी जी कमल के पुष्प पर बैठी हैं, जो कोमलता व सुंदरता का प्रतीक है। इनके वाहन गरुड़ तथा उलूक हैं। सम्पूर्ण जगत लक्ष्मी जी द्वारा ही चलायमान है। जिन पर लक्ष्मी माता की कृपा होती है, वह दरिद्र, दुर्बल, असंतुष्ट नहीं रहता। लक्ष्मी को स्वच्छता व सुव्यवस्था प्रिय है। अपवित्र स्थानों पर लक्ष्मी कदापि वास नहीं करतीं। लक्ष्मी के एक मुख व चार हाथ हैं। वह एक लक्ष्य और चार प्रकृतियों (दूरदर्शिता, दृढ़ संकल्प, श्रमशीलता एवं व्यवस्था शक्ति) की प्रतीक हैं। वाहन उलूक निर्भीकता एवं रात्रि में भी देखने की क्षमता का प्रतीक है। लक्ष्मी का जल

अभिषेक करने वाले गजराजों को परिश्रम और मनोयोग कहते हैं। उनका लक्ष्मी के साथ अविच्छिन्न संबंध है। यह युग्म जहां भी रहेगा, वहां वैभव की कमी नहीं रहेगी।

लक्ष्मी-इन्द्र-कुबेर-योग

लक्ष्मी जी चंचल रूपा हैं। एक स्थान पर ज्यादा समय तक नहीं टिकतीं। ज्योतिष के अनुसार, इनके स्थिर वास के लिए लक्ष्मी-इन्द्र-कुबेर योग में इनकी आराधना करनी चाहिए। कोई भी महत्वपूर्ण कार्य सम्पन्न करवाने के लिए यह शुभ समय माना जाता है। लक्ष्मी-इन्द्र-कुबेर-योग कार्तिक मास की अमावस्या तिथि को बनता है।



श्रीयंत्र की पूजा क्यों करते हैं?

वेदों के अनुसार श्रीयंत्र में तैंतीस करोड़ देवताओं का वास होता है। कलियुग में श्रीयंत्र को कामधेनु के समान माना गया है। इसके मंत्रसिद्ध होने पर सभी प्रकार की श्री अर्थात् चारों पुरुषार्थ की प्राप्ति होती है। इस यंत्र में वास्तुदोष निवारण की अद्भुत क्षमता है। इसमें ब्रह्मांड की उत्पत्ति और विकास का भी प्रदर्शन है।

सर्वप्रथम गणेश पूजन क्यों?



गणेशजी को विघ्नहर्ता और रिद्धि-सिद्धि का स्वामी माना गया है। इनके स्मरण, ध्यान, जप और पूजन से समस्त कामनाओं की पूर्ति होती है। ये बुद्धि के अधिष्ठाता, साक्षात् प्रणव स्वरूप और शीघ्र प्रसन्न होने वाले देवता हैं। यही कारण है कि शुभ कार्यों में सर्वप्रथम गणेशजी का पूजन किया जाता है। इसी आधार पर भारतीय समाज में एक उक्ति भी प्रचलित हो गई। जब किसी कार्य को आरंभ किया जाता है तो प्रायः कहा जाता है कि 'कार्य का श्रीगणेश हो गया है।' किसी भी शुभ कार्य को शुरू करते समय 'श्री गणेशाय नमः' का उच्चारण करते हुए निम्न मंत्र का उच्चारण किया जाता है- **वक्रतुण्ड महाकाय सूर्यकोटि समप्रभः। निर्विघ्नं कुरु मे देव सर्व कार्येषु सर्वदा।**

कब चमकेंगे सफलता के सितारे

कई बार जीवन में अवसर आते हैं, चाँस मिलता है मगर बेस्ट परफार्म करने के बाद भी या तो वह मौका हाथ से निकल जाता है या फिर उस कार्य में तकलीफें ही आती-जाती हैं। ऐसी स्थिति बार-बार उत्पन्न होने पर किसी का भी डिप्रेशन होना स्वाभाविक है और युवा जिनके लिए जीवन का एक-एक क्षण कीमती होता है, इस डिफिट के चलते नेगेटिव सोच के शिकार होकर डिप्रेशन के अंधेरे में चले जाते हैं।

आइए देखें, ग्रहों की इसमें क्या भूमिका है।

जब कुंडली में कहीं भी शनि-मंगल, राहु-मंगल, राहु-शनि, शनि-केतु जैसी युति-प्रतियुति हो तो ये जीवन में अनसर्टेनिटी का निर्माण कर देती हैं। आपके फोकस को कम करती हैं और कई बार गलत डिसिजन के

चलते अच्छे-खासे मौके हाथ से फिसल जाते हैं।

इसके अलावा यदि लग्न का स्वामी ग्रह और चंद्रमा भी कमजोर हो, अस्त हो, शत्रु क्षेत्री हो तो स्थिति विकट हो जाती है। क्या करें : यदि कुंडली में ऐसे कुयोग है तो सबसे पहले स्वभाव में, वाणी में नम्रता व लचीलापन लाएँ। स्वयं को बेहिसाब संघर्ष के लिए तैयार रखें। खूब मेहनत और व्यायाम करने की आदत डालें। बड़ों का व स्त्री का भूल कर भी अपमान न करें। गुरु की शरण में रहें।

इनके अलावा इस कुयोग के उपाय यानि ग्रह-शांति, जप, दान करें। मुख्य ग्रह यानी लग्न के स्वामी और चंद्रमा की मजबूती के उपाय करें। फिर धैर्य के साथ आगे बढ़ते जाएँ।



जन्म नक्षत्र से जानिए कैसे हैं आप

धनवान तथा भाग्यवान होते हैं अश्विनी नक्षत्र वाले आकाश मंडल में तारों के समूह को नक्षत्र कहते हैं। हम देखते हैं कि तारों के समूह से कहीं अश्व, कहीं शकट, सर्प आदि के आकार बन जाते हैं। ये आकृतियां ही नक्षत्र हैं।

जिस प्रकार लोक व्यवहार में एक स्थान से दूसरे स्थान की दूरी मील, कोस या किलोमीटर में नापी जाती है। उसी प्रकार आकाश मंडल की दूसरी नक्षत्रों से ज्ञात की जाती है।

ज्योतिष शास्त्र में समस्त आकाश मंडल को 27 भागों में विभक्त कर प्रत्येक भाग का नाम एक-एक नक्षत्र रखा गया है।

सूक्ष्मता से समझाने के लिए प्रत्येक नक्षत्र के चार भाग किए गए हैं जो चरण कहलाते हैं। अभिजित को 28वां नक्षत्र माना गया है और इसका स्वामी ब्रह्मा को कहा गया है।

ज्योतिर्विदों का अभिमत है कि उत्तराषाढ़ा की अंतिम 15 घड़ियां और श्रावण के प्रारंभ की चार घड़ियां, इस प्रकार 19 घड़ियों के मान वाला अभिजित नक्षत्र होता है। यह समस्त कार्यों में शुभ माना गया है।

आइए जानते हैं कैसे होते हैं अश्विनी नक्षत्र वाले :

शास्त्रों के अनुसार अश्विनी नक्षत्र में जन्म होने से मनुष्य सुंदर स्वरूप, स्थूल शरीर, अति बुद्धिमान, अति प्रजा वाला, नम्रता सहित, सत्ययुक्त, सेवाभावी, कार्यों में पटु, सर्वजन प्रिय, धनवान तथा भाग्यवान होता है। यह संपूर्ण प्रकार की संपत्तियों को प्राप्त करने वाला, स्त्री और आभूषण तथा पुत्रादिर से संतोष प्राप्त करता है।

अश्विनी नक्षत्र में जन्म होने से जातक ईश्वर भक्त, चतुर, बुद्धिमानिपूर्ण कार्यों में प्रतिष्ठित, साम्यवादी, आभूषण एवं रत्नों का प्रेमी, जायदाद संबंधी मामलों से चिंताग्रस्त, क्रोधी, बड़े भाई न हों या भाई रोगग्रस्त हों, नेतृत्व प्रधान कार्यों में अभिरूचि, ज्योतिष, वैद्य, शास्त्रों में रुचि रखने वाले, भ्रमणप्रिय, चंचल प्रकृति तथा महत्वाकांक्षी विचारों के होते हैं।

इस नक्षत्र में जन्म होने पर जन्म राशि मेष तथा राशि स्वामी मंगल होगा। अवकहड़ा चक्र के अनुसार जातक का वर्ण क्षत्रिय, वश्य चतुष्पद, योनि अश्व, महावैर योनि महिष, गण देव तथा नाड़ी आदि है।

सातवें भाव में छुपा है जीवनसाथी का राज

किसी भी कन्या कीकुंडली के सातवें भाव से उसके होने वाले जीवनसाथी का विचार किया जा सकता है। युवतियों में अक्सर यह जिज्ञासा रहती है कि उनकी शादी कैसे होगी, उनका पति कैसा होगा और उसके साथ उनका तालमेल कैसा रहेगा? यहां पेश है कुछ मूलभूत जानकारी कुंडली के सातवें भाव (जीवनसाथी भाव) के बारे में:

- सप्तम भाव का स्वामी राहु से पीड़ित हो तो उसका पति व्यसनी होगा।
- सप्तमेश लग्न में हो तो ऐसी कन्या स्वविवेक से विवाह करती है।
- सप्तम भाव का स्वामी नीच का होकर बैठ जाए तो उसे अपने पति से लाभ की गुंजाइश नहीं रहेगी।

- सप्तम भाव का स्वामी दशम भाव में उच्च का हो तो ऐसी कन्या का भावी जीवनसाथी व्यापारी या राजनीतिज्ञ भी हो सकता है, लेकिन मोटे शरीर वाला होगा।
- सप्तम भाव में सूर्य, बुध, शुक हो तो ऐसी कन्या का पति किसी भी योग्य न होगा।
- सप्तमेश अष्टम भाव में हो तो विवाह देर से होगा व पति का सामान्य रंग-रूप का परिश्रमी होगा।
- सप्तमेश षष्ठ भाव में हो तो ऐसी कन्या का विवाह देरी से होगा व अनेक बाधाएं आ सकती हैं।
- सप्तमेश, पंचमेश व लग्नेश की युति हो तो वह कन्या प्रेम विवाह करेगी।
- सप्तमेश शनि चंद्र युति हो तो विवाह बहुत उम्र में होगा या विवाह नहीं भी हो सकता है।

होगा या विवाह नहीं भी हो सकता है।

- सप्तमेश केतु मंगल के साथ हो तो संबंध विच्छेद होने की आशंका अधिक रहेगी।

● सप्तम भाव को शनि देखे व मंगल भी हो तो उसका वर ठीक नहीं होगा। विवाह होने के बाद तनाव रहेगा।

उपरोक्तानुसार जन्म कुंडली में ग्रह हो तो फल उसी प्रकार मिलेंगे। ग्रहों का मार्गी उदय होना उत्तम फलदायी रहेगा। वहीं अशुभ ग्रहों की युति वक्रि हो तो फल में न्यूनाधिक फल होगा। इस प्रकार हम जान



सकते हैं कि वर कैसा होगा।